

हीट एक्शन प्लान का विश्लेषण

प्रलिस के लिये:

सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च, हीट एक्शन प्लान, जलवायु परिवर्तन, हीटवेव्स।

मेन्स के लिये:

हीट एक्शन प्लान का विश्लेषण

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारत के अग्रणी सार्वजनिक नीति थिंक टैंक- **सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च** (Centre for Policy Research- CPR) ने पहली विश्लेषण रिपोर्ट जारी की है, जिसमें कहा गया है कि अधिकांश **हीट एक्शन प्लान** (Heat Action Plans- HAP) **स्थानीय आबादी** के सामने आने वाले जोखिमों के अनुकूल नहीं हैं।

- यह मूल्यांकन करने के लिये कि भारत की नीतित कार्रवाई गर्म मौसम में किस प्रकार संचालित हो रही है; CPR ने 18 राज्यों में सभी 37 हीट एक्शन प्लान (HAP) का विश्लेषण किया और यह पाया गया कि अधिकांश HAP स्थानीय संदर्भों के लिये उपयुक्त नहीं हैं।

हीट एक्शन प्लान (HAP):

- HAP आर्थिक रूप से **हानिकारक एवं जीवन के लिये खतरनाक हीटवेव** के लिये प्राथमिक नीतित प्रतिक्रिया है। HAP हीटवेव के प्रभाव को कम करने के लिये कई गतिविधियों, आपदा प्रतिक्रियाओं एवं गर्मी के बाद के प्रतिक्रिया उपायों को निर्धारित करते हैं।
- HAP **राज्य, ज़िला और शहर स्तर पर मानव मृत्यु की संख्या और लू के अन्य प्रतिकूल प्रभावों को सीमित करने के लिये अल्पकालिक कार्रवाई करने** तथा पछिली हीटवेव के डेटा तथा विश्लेषण के आधार पर आने वाले समय में हीटवेव का सामना करने हेतु दीर्घकालिक कार्रवाई के लिये तैयार किये गए दस्तावेज़ हैं।
 - अल्पकालिक कार्रवाइयों में लोगों को हीटवेव के प्रतिक्रिया करना और स्वास्थ्य तथा कृषि जैसे विभिन्न विभागों का समन्वय करना शामिल हो सकता है।
 - दीर्घकालिक कार्रवाइयों में **अवसंरचनात्मक परिवर्तन जैसे- ठंडी छतें, हरति आवरण में वृद्धि और जल संचयन संरचनाएँ** शामिल हो सकती हैं।

प्रमुख बटु

- अभूतपूर्व चुनौती:**
 - अत्यधिक गर्मी स्वास्थ्य और उत्पादकता के लिये एक अभूतपूर्व चुनौती है, **जलवायु परिवर्तन** के कारण हाल के दशकों में हीटवेव की आवृत्ति में वृद्धि हुई है।
 - वर्ष 1998, 2002, 2010, 2015 और 2022 में हुई हीटवेव की घटनाओं के कारण श्रम उत्पादकता में कमी, जल की उपलब्धता, कृषि तथा ऊर्जा प्रणालियों पर काफी प्रभाव पड़ा जिससे बड़े पैमाने पर मौतों सहित व्यापक स्तर पर आर्थिक क्षति हुई।
 - मानव-प्रेरित कार्रवाइयों के कारण भारत में अत्यधिक **हीटवेव** की घटनाओं की आवृत्ति की संभावना में 30 गुना वृद्धि हो गई है।
- औसत ताप में वृद्धि:**
 - वर्ष 2050 तक 24 शहरी केंद्रों में कम-से-कम 35 डिग्री सेल्सियस तापमान के औसत ग्रीष्मकालीन उच्च स्तर को पार करने का अनुमान है, जो आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्गों को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करेगा।
- स्थानीय परदृश्य हेतु उपयुक्त नहीं:**
 - अधिकांश HAPs स्थानीय परदृश्य हेतु नहीं बनाए गए हैं। वे आमतौर पर अत्यधिक शुष्क तापमान पर ध्यान केंद्रित करते हैं और आर्द्र ताप तथा गर्म रातों से उत्पन्न खतरों को अनदेखा करते हैं।

- अधिकांश HAPs ने राष्ट्रीय हीटवेव थ्रेशोल्ड को अपनाया है जो स्थानीय आबादी द्वारा सामना किये जाने वाले जोखिमों के अनुकूल नहीं हो सकता है।
- 37 HAPs में से केवल 10 में स्थानीय रूप से नरिदष्टि तापमान सीमाएँ हैं।
- **HAPs हेतु वृत्तिपोषण की कमी:**
 - 37 HAPs में से केवल तीन के वृत्तीयन स्रोतों की पहचान की गई है। आठ HAPs कार्यान्वयन वभिगों को संसाधनों का स्व-आवंटन की मांग करते हैं, जो एक गंभीर वृत्तीयन अभाव का संकेत देता है।
- **कमज़ोर कानूनी आधार:**
 - HAPs का कानूनी आधार कमज़ोर है। समीक्षा की गई HAPs में से कोई भी अपने अधिकार के कानूनी स्रोतों को इंगति नहीं करता है। यह HAPs नरिदेशों को प्राथमकता देने एवं उनका अनुपालन करने हेतु नौकरशाही प्रोत्साहन को कम करता है।
- **अपर्याप्त पारदर्शिता:**
 - इसके अलावा HAPs अपर्याप्त पारदर्शी हैं। HAPs का कोई राष्ट्रीय कोष नहीं है तथा बहुत कम HAPs ऑनलाइन सूचीबद्ध हैं। यह भी स्पष्ट करने की आवश्यकता है ककिया इन HAPs को समय-समय पर अपडेट कया जा रहा है और कया यह मूल्यांकन डेटा पर आधारित है।
- **भारत अत्यधिक संवेदनशील:**
 - भारत गर्मी हेतु सबसे अधिक अनावृत और संवेदनशील देशों में से एक है।
 - वर्ष 1951 और 2016 के बीच तीन दविसीय समवर्ती गर्म दनि और रात की घटनाओं में काफी वृद्धि हुई है, साथ ही RCP (कार्बन की सांद्रता को संदर्भित करता है) 4.5 एवं RCP 8.5 के मध्यवर्ती एवं उच्च उत्सर्जन के साथ इसके वर्ष 2050 तक दो से चार गुना बढ़ने का अनुमान है।

अनुशंसाएँ:

- ग्लोबल वार्मिंग को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक पहुँचने से रोकने हेतु अगले 20 वर्षों के दौरान उत्सर्जन को कम करना होगा।
- HAP को या तो नई नधियों से या मौजूदा राष्ट्रीय और राज्य नीतियों के साथ कार्यों को जोड़कर वृत्तिपोषण के स्रोतों की पहचान करनी चाहिये तथा नरितर विकास की नींव के रूप में स्वतंत्र मूल्यांकन करना चाहिये।
- भारत में सबसे नचिले स्तर के लोग अत्यधिक गर्मी का अनुभव करते रहेंगे, जसिका उनके स्वास्थ्य और जीविकोपार्जन की क्षमता दोनों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

स्रोत: इकोनॉमिक टाइम्स

PDF Referenece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/critical-assessment-of-heat-action-plans>

